**CBSE Class 07 HIndi**
**NCERT Solutions**
**पाठ-17 वीर कुँवरसिंह**

**1. वीर कुँवरसिंह के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?**
**उत्तर:-** वीर कुँवरसिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वयोवृद्ध सिपाही थे।उन के व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ मुझे प्रभावित करती हैं -
1-साहस - कुँवरसिंह का पूरा जीवन ही उनके साहसपूर्ण कार्यों से भरा है,जैसे उनके द्वारा स्वयं ही अपनी घायल भुजा को काटकर गंगा में समर्पित कर देना साहस का सबसे अद्वितीय उदाहरण है।
2-उदारता - कुँवरसिंह का व्यक्तित्व बड़ा ही उदार था। उनकी माली हालत अच्छी न होने के बावजूद वे निर्धनों की हमेशा सहायता करते थे। इसी उदारता के फलस्वरूप उन्होंने कई तालाबों, कुँओं, स्कूलों तथा मार्गों का निर्माण किया।
3-स्वाभिमानी - कुँवरसिंह स्वाभिमानी व्यक्ति थे यह इसी बात से पता चलता है कि वयोवृद्ध होने के बाद भी उन्होंने अंग्रेजों के आगे अपने घुटने नहीं टेके और अन्तिम साँस तक संघर्ष करते रहे।
4-सांप्रदायिक सद्भाव - सांप्रदायिक सद्भाव में कुँवरसिंह की गहरी आस्था थी, इसलिए इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन उनकी सेना में धर्म के आधार पर नहीं अपितु कार्यकुशलता और वीरता के कारण उच्च पद पर आसीन थे। उनके यहाँ हिन्दुओं और मुसलमानों के सभी त्योहार एक साथ मिलकर मनाए जाते थे।

---

**2. कुँवरसिंह को बचपन में किन कामों में मजा आता था? क्या उन्हें उन कामों से स्वतंत्रता सेनानी बनने में कुछ मदद मिली?**
**उत्तर:-** कुँवरसिंह को बचपन में घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में मजा आता था। इन्हीं कार्यों के कारण उनके अंदर साहस और वीरता का विकास हुआ, जिससे वे आगे जाकर अंग्रेजों से लोहा ले सके।

---

**3. सांप्रदायिक सद्भाव में कुँवर सिंह की गहरी आस्था थी- पाठ के आधार पर कथन की पुष्टि कीजिए।उत्तर:-** सांप्रदायिक सद्भाव में कुँवरसिंह की गहरी आस्था थी।उन्होंने कभी धर्म संबंधी भेदभाव नहीं किया, इसलिए इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन उनकी सेना में धर्म के आधार पर नहीं अपितु कार्यकुशलता और वीरता के कारण उच्च पद पर आसीन थे। उनके यहाँ हिन्दुओं और मुसलमानों के सभी त्योहार एक साथ मिलकर मनाए जाते थे। उन्होंने पाठशाला और मकतब भी बनवाए तथा सभी की शिक्षा की समान व्यवस्था की।

---

**4. पाठ के किन प्रसंगों से आपको पता चलता है कि कुँवर सिंह साहसी, उदार एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे? उत्तर:-** अंग्रेजी सेना से मुकाबला करते समय उनके हाथ में गोली लग गई जिससे जहर फैलने की आशंका थी,तब कुँवर सिंह ने तत्काल अपनी घायल भुजा काटकर गंगा में समर्पित कर दी यह उनके साहस का सबसे अद्वितीय उदाहरण है।उनकी सेना में हिन्दू-मुस्लिम दोनों धर्मों के लोग थे,जनता की भलाई के लिए कुएँ, धर्मशाला, पाठशाला आदि निर्माण कार्य करवाये तथा आजीवन अंग्रेजो के खिलाफ संघर्ष किया। इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में कुँवर सिंह हमेशा अपने साहस, उदारता और स्वाभिमान के लिए याद किए जायेगें।।

**5. आमतौर पर मेले मनोरंजन, खरीद फ़रोख्त एवं मेलजोल के लिए होते हैं। वीर कुँवरसिंह ने मेले का उपयोग किस रूप में किया?**
**उत्तर:-** आमतौर पर मेले मनोरंजन, खरीद फ़रोख्त एवं मेलजोल के लिए होते हैं किन्तु वीर कुँवरसिंह ने मेले का उपयोग अंग्रेजी शासन के विरूद्ध क्रांतिकारी गतिविधियों को संचालित करने, गुप्त बैठकों में योजनाओं को बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने के लिए किया।

---

**6. सन् 1857 के आंदोलन में भाग लेने वाले किन्हीं चार सेनानियों पर दो-दो वाक्य लिखिए।**
**उत्तर:-** 1.तात्या टोपे- तात्या टोपे का जन्म 1814 में हुआ था उनका पूरा नाम 'रघुनाथ राव पांडू यवलेकर' था।जून 1858 से लेकर 1859 तक तात्या टोपे अंग्रेजों के विरूद्ध पूरी शक्ति से लड़ते रहे।
2. मंगल पांडे- मंगल पाण्डेय का जन्म 19 जुलाई 1827 को वर्तमान उत्तर प्रदेश(जो उन दिनों संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के नाम से जाना जाता था) के बलिया जिले में स्थित नागवा गाँव में हुआ था।भारत की आजादी की पहली लड़ाई अर्थात् 1857 के विद्रोह की शुरुआत मंगल पाण्डेय से हुई, जब गाय व सुअर की चर्बी लगे कारतूस लेने से मना करने पर उन्होंने विरोध जताया। इसके परिणाम स्वरूप उनके हथियार छीन लिये जाने व वर्दी उतार लेने का फौजी हुक्म हुआ। मंगल पाण्डेय ने उस आदेश को मानने से इंकार कर दिया और 29 मार्च सन् 1857 को उनकी राइफल छीनने के लिये आगे बढे अंग्रेज अफसर मेजर ह्यूसन पर आक्रमण कर दिया।
3. बहादुर शाह ज़फ़र- बहादुर शाह ज़फ़र (1775-1862) भारत में मुग़ल साम्राज्य के आखिरी शहंशाह थे और उर्दू भाषा के माने हुए शायर थे। उन्होंने 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय सिपाहियों का नेतृत्व किया। युद्ध में हार के बाद अंग्रेजों ने उन्हें बर्मा (अब म्यांमार) भेज दिया जहाँ उनकी मृत्यु हुई।
4. रानी लक्ष्मीबाई -तात्या टोपे और रानी की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक किले पर कब्जा कर लिया। 17 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रिटिश सेना से लड़ते-लड़ते रानी लक्ष्मीबाई ने वीरगति प्राप्त की। लड़ाई की रिपोर्ट में ब्रिटिश जनरल ह्यूरोज़ ने टिप्पणी की कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिए उल्लेखनीय तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक भी थी।

**• भाषा की बात**
**7. आप जानते हैं कि किसी शब्द को बहुवचन में प्रयोग करने पर उसकी वर्तनी में बदलाव आता है। जैसे - सेनानी एक व्यक्ति के लिए प्रयोग करते हैं और सेनानियों एक से अधिक के लिए।**
**सेनानी शब्द की वर्तनी में बदलाव यह हुआ है कि अंत के वर्ण 'नी' की मात्रा दीर्घ 'ी' (ई) से ह्रस्व 'ि' (इ) हो गई है।**
**ऐसे शब्दों को, जिनके अंत में दीर्घ ईकार होता है, बहुवचन बनाने पर वह इकार हो जाता है, यदि शब्द के अंत में ह्रस्व इकार होता है, तो उसमें परिवर्तन नहीं होता जैसे - दृष्टि से दृष्टियों।**
**नीचे दिए गए शब्दों के वचन बदलिए -**
**नीति, स्थिति, जिम्मेदारियों, सलामी, स्वाभिमानियों, गोली।**
**उत्तर:-** नीति - नीतियों स्थिति - स्थितियों जिम्मेदारियों - जिम्मेदारी सलामी - सलामियों स्वाभिमानियों - स्वाभिमानी गोली - गोलियों